BA - 6th Sem

DR. HARISH RAWAT

Page No. 1

प्र01.) वाणिज्यवाद की परिभाषा व उदय के कारणों व उद्देश्य लिखो।

उत्तर 1.) वाणिज्यवाद की परिभाषा :—

वाणिज्यवाद की उपयुक्त परिभाषा जुटा पाना कठिन है क्योंकि विभिन्न राष्ट्रों में उसका स्वरूप भिन्न - भिन्न था। यह विचारधारा संगठित तथा सुव्यवस्थित भी नहीं थी। इसकी परिभाषा देना इतना सरल नहीं है परंतु फिर भी इसके सामान्य लक्षणों को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि व्यापार और उद्योग को नियमित करके सोना - चांदी प्राप्त करने की नीति को ही वाणिज्यवाद कहा जाता है।

'वाणिज्यवाद' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग एडम स्मिथ ने 1776ई० में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "वैल्थ ऑफ नेशंस" में किया था इसके बाद इस शब्द का प्रयोग प्रसिद्ध जर्मन इतिहासकार गुस्ताव शमोलर ने अपनी पुस्तक 'वाणिज्यिक प्रणाली तथा उसका ऐतिहासिक महत्व' तथा फ्रेडरिक महान की आर्थिक नीतियों का अध्ययन' में किया था।

2.) वाणिज्यवाद के उद्देश्य :—

वाणिज्यवाद के मुख्य उद्देश्यों का वर्णन इस प्रकार है कि —

(i) अधिक - से - अधिक सोना - चांदी एकत्र करना ताकि अपना राष्ट्र अन्य राष्ट्रों से अधिक समृद्धशाली बने।

2.) राष्ट्र के व्यापार को अधिक - से - अधिक विकसित करना।

3.) आयात की अपेक्षा निर्यात पर अधिक शुल्क लगाना ताकि

व्यापार संतुलन अपने पक्ष में रहे तथा स्वदेशी आंदोलन मुद्रा बाहर न जाए।

4) व्यापार तथा उद्योगों से प्राप्त आय से अपनी सैनिक शक्ति को सुदृढ़ करना तथा राजनीतिक दृष्टि से अपने राष्ट्र को शक्तिशाली बनाना।

वाणिज्यवाद के उदय के कारण

1) पुनर्जागरण :— वाणिज्यवाद के उदय में पुनर्जागरण ने महत्वपूर्ण योगदान दिया पुनर्जागरण आंदोलन यूरोप के विभिन्न देशों में 15वीं - 16वीं शताब्दी में चला था इस आंदोलन के परिणामस्वरूप यूरोप के लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आ गया था पुनर्जागरण से पहले लोग हर समय परलोक सुधारने के बारे में सोचते रहते थे पुनर्जागरण होने के बाद मनुष्य भौतिकवादी बन गये थे। उनकी यह प्रवृत्ति व्यापार तथा वाणिज्य के विकास में सहायक सिद्ध हुई तथा इससे वाणिज्यवाद को प्रोत्साहन मिला।

भौगोलिक खोजें :— 15वीं - 16वीं शताब्दी में यूरोप के विभिन्न देशों के साहसिक नाविकों ने अनेक नए समुद्री मार्गों की खोज की। उस समय यूरोप के वैज्ञानिक नए - नए अविष्कार कर रहे थे उन्होंने नए प्रकार के हल्के तथा मजबूत समुद्री जहाज बनाए।

(6) वाणिज्यवादी विचारकों का योगदान :— विभिन्न यूरोपीय देशों में वाणिज्यवादी विचारधारा को प्रचलित करने के लिए विभिन्न वाणिज्यवादी विचारकों ने भी उल्लेखनीय योगदान दिया है।

(1) थामस मुन 1571 - 1641 ई० :— थामस मुन इंग्लैण्ड का प्रसिद्ध व्यापारी तथा लेखक था वह ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एक निदेशक था उसने अनेक पुस्तकें लिखीं। उसने 1630 ई० में इंग्लैण्ड्स ट्रेजर बाई फॉरन ट्रेड नामक पुस्तक लिखी थी। उसने अनेक पुस्तकें लिखीं। उसने 1630 ई० में उसके अनुसार इस नीति के अनुसार इंग्लैण्ड में अधिक मात्रा में सोना- चांदी आ सकता है। आ पर अधिक कर लगा दिया जाए

2) एंटोनियो सेरा :— एंटोनियो सेरा इटली का एक सिद्ध वाणिज्यवादी था। उसने देशों में सोने - चांदी की वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उसके अनुसार जिन देशों के सोने - चांदी का अभाव है उन्हें अन्य साधनों से सोने- चांदी अवश्य प्राप्त करना चाहिए वह कृषि - अर्थव्यवस्था के पक्ष में नहीं था उसके अनुसार कृषि से लाभ निश्चित नहीं होगा तथा न ही इसके उत्पादों को लम्बे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

(iii) मारट्रेतउन :—

मारट्रेतउन फ्रांस का एक महान् वाणिज्यवादी विचारक था। 1615 ई० मे उसकी एक प्रसिद्ध पुस्तक छपी जिसमे उसमे कृषि के विकास पर बल दिया था उसके अनुसार कृषि ही सारी सम्पदा का आधार है वह बेकार तथा आलसी व्यक्तियों को पसंद नही करता था। उसका सर्वप्रथम कर्तव्य है कि वह यह देखे कि कोई व्यक्ति बेरोजगारी न हो क्योंकि बेकारी मनुष्य की शक्ति को समाप्त कर देती है वह अधिक निर्यात तथा कम आयात का समर्थक था।

(iv) फिलिप विलियम वॉन होरनिक :—

फिलिप विलियम वॉन होरनिक ऑस्ट्रेलिया का अर्थशास्त्री तथा विचारक था उसने 1684 ई० मे छपी अपनी पुस्तक मे यह विचार प्रकट किया था कि किसी राष्ट्र की शक्ति अधिक-से अधिक सोना-चांदी की खानो को ढूंढना चाहिए। उसके बदले अपने देश मे निर्मित वस्तुओं को बाहर भेजना चाहिए और सोना-चांदी बचाकर रखना चाहिए।

(v) सर विलियम पैटी —

यह एक अंग्रेज अर्थव्यवस्था था। उसने अनेक पुस्तके लिखी थी। उसकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक का नाम 'राजनीतिक अर्थशास्त्र' था सर विलियम पैटी के अनुसार भूमि तथा मजदूरी दोनो ही धन कमाने के साधन है।

उन्होंने कम्पास का अविष्कार किया जिससे समुद्री यात्रा अधिक सुरक्षित तथा सुगम बन गई अनेक इस कार्य के लिए पुर्तगाल, स्पेन, हॉलैंड, इंग्लैंड तथा फ्रांस की सरकारों ने इन नाविकों को संरक्षण प्रदान किया इन साहसी नाविकों ने नए समुद्री मार्गो द्वारा अज्ञात देशो मे यात्रा की। नए देशों के सम्पर्क मे आने के पश्चात् यूरोप के देशों से अपने व्यापारिक सम्बंध स्थापित किए। अपने राष्ट्र की धन-दौलत मे वृद्धि करने के उद्देश्य से यूरोपी देशो ने अपने उपनिवेशो के प्रति आयात-निर्यात के नियम बनाए जो वाणिज्यवाद का रूप धारण कर गए।

3) धर्म-सुधार आंदोलन :—

धर्म-सुधार आंदोलन भी वाणिज्यवाद के उदय का एक प्रमुख कारण बना यह आंदोलन पोप की अनुचित शक्तियों तथा ईसाई धर्म मे प्रचलित बुराईयों को दूर करने के लिए चलाया गया था विभिन्न धर्म सुधारकों पोप का प्रभाव समाप्त करने तथा उस द्वारा अपने अधिकारों का कुप्रयोग करने के विरुद्ध जोरदार आवाज उठाई। अब वे अंध-विश्वास की अपेक्षा तर्क पर बल देने लगे। भौतिकवादी प्रवृत्ति के कारण अब वे अधिक-से-अधिक धन संचित करने लगे। परिणामस्वरूप वाणिज्यवादी प्रवृत्ति का विकास हुआ।

Page No. 6

4.) आर्थिक परिवर्तन :—

आर्थिक परिवर्तनों ने भी वाणिज्यवाद को प्रोत्साहित करने मे अहम् भूमिका निभाई मध्य युग में सिक्कों का प्रचलन बहुत कम होता था तथा अधिकतर व्यापार वस्तु - विनिमय द्वारा होता था। राष्ट्रीय राज्य स्थापित हो जाने के कारण व्यापार और वाणिज्य का महत्व बढ़ गया। इस कारण विभिन्न देशों की सरकारों ने धातु मुद्रा जारी कर दी धीरे-धीरे आंतरिक तथा बाहरी व्यापार में सोने - चांदी का महत्व बढ़ गया अनेक बैंकों का निर्माण हुआ बैंकों ने भी वाणिज्यवाद के उदय में एक सहायक कारक सिद्ध हुए।

5) राष्ट्रीय राज्यों का उत्थान :—

पुनर्जागरण से पूर्व यूरोप मे सामंतवाद का बोलबाला था। प्रशासन सम्बन्धी अधिकतर शक्तियां सामंतों के हाथों में ही थी। इस प्रकार प्रशासनिक व्यवस्था में अनेक दोष पाए जाते थे। इन दोषों को दूर करने के उद्देश्य से कई सम्राटों ने सामंतों को शक्तिहीन करके शक्तिशाली राज्यों का उत्थान हुआ परिणामस्वरूप वस्तुओं की मांग बढ़ गई जिससे व्यापार को प्रोत्साहन मिला। प्रत्येक राज्य अपनी राजनीतिक शक्ति का अधिक - से - अधिक विस्तार करना चाहता था जिसके लिए धन की आवश्यकता थी। अतः प्रत्येक राज्य ने व्यापार की विकसित करने की नीति अपनाई। वाणिज्यवाद को नई शक्तियां प्राप्त हुई थी।

Page No. 7

प्र०२. पुंजीवादी क्या है इसके उदय के कारक व प्रभाव लिखो।

उ०-> भूमिका —

आधुनिक काल मे पूंजीवादी एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रणाली है तथा किसी - न - किसी रूप मे प्रत्येक देश में विद्यमान है। इसका उदय 15वीं शताब्दी के अंत में हुआ था इसके उदय के लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे जैसे राजतंत्र, धर्म, वाणिज्यवाद, कृषि क्रांति और औद्योगिक क्रांति आदि पूंजीवादी के उदय के कारणों तथा उसके प्रभावों का वर्णन निम्नलिखित अनुसार है कि —

यूरोप में पूंजीवाद के उदय के लिए उत्तरदायी कारक

(1) राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना :—

15वीं शताब्दी के पश्चात् हॉलैंड, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन, इंगरी आदि अनेक राष्ट्रीय राज्य स्थापित हो गये थे। इनकी स्थापना पूंजीवाद के उत्थान में सहायक सिद्ध हुई। इससे पूंजीवाद के लिए अनुकूल वातावरण बना। अब मजदूरों को उचित ढंग से कम पर लगाया सकता है। क्योंकि उन्हें काम पर लगाने की शर्तों सम्बंधी कानूनों को कार्यरूप दिया जा सकता है।

2.) सामंतवाद का अंत :—

मध्यकाल में यूरोप के विभिन्न

देशों में सामंतवाद का बोल-बाला था सामंतों के पास विशाल भूमि होती थी तथा उनके पास बहुत सा धन एकत्र हो गया है। सामंत अधिकतर पैसा भोग-विलास में व्यय करते थे अत: उन्होंने अपने अधीन सेवकों को अपना मजदूर बना लिया। ये मजदूर अब सामंतों की भूमि पर काम करने की अपेक्षा नकद वेतन बदले पुंजीवादी के पास काम करने लगे।

3.) नगरों का विकास :—

16 वी शताब्दी में यूरोप के कई देशों में विभिन्न नगरों का विकास हुआ इनमें से मीलान, वेनिस, रोम, पैरिस, लंदन, लुबेक, मैज, जेनीभा आदि नगर बहुत प्रसिद्ध थे। इन नगरों में व्यापार तथा उद्योगों का विकास हुआ। ये नगर बाद में पुंजीवाद केन्द्र बन गए।

4.) हिसाब - किताब की नई विधि :—

मध्ययुग में व्यापार सम्बंधी हिसाब-किताब रखने की विधि में अनेक दोष थे। इस दोषपूर्ण विधि के कारण व्यापार की सही स्थिति का पता नहीं चलता था। शताब्दी के अंत में नई विधि प्रचलित हुई जिसे दोहरा-अंकन विधि कहा जाता है इस कारण अब व्यापारियों को अपने व्यापार का सही स्थिति का पता चल जाता था। अत: यह प्रणाली पुंजीवाद के उत्थान में बड़ी सहायक सिद्ध हुई।

5.) अरबी आंकड़ा प्रणाली :—

प्राचीनकाल से ही यूरोप में रोमन आंकड़ा प्रणाली प्रचलित थी। क्योंकि यह प्रणाली बड़ी दोषपूर्ण थी इसलिए व्यापार का हिसाब - किताब रोमन आंकड़ों में रखना बड़ा कठिन था 16 वी शताब्दी में अरबी आंकड़ा प्रणाली का प्रचलन आरम्भ हुआ अत: अरबी आंकड़ा प्रणाली भी पुंजीवादि के उत्थान में बड़ी सहायक सिद्ध हुई।

6.) धर्म - सुधार आंदोलन का प्रभाव :—

पुनर्जागरण के पश्चात् चलने वाले धर्म सुधार आंदोलनों में भी यूरोप के लोगों की मनुवृत्ति को बहुत प्रभावित किया। पूर्व के लोग बड़े अंधविश्वासी रूढ़िवादि थे। वे अपना परलोक सुधारने की चिंता में लगे रहते थे। धर्म - सुधारों से प्रभावित होकर अब वे तर्क पर बल लगे तथा भौतिकवादि बन गए। अब वे अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए अधिक - से - अधिक धन अर्जित करने इसकी इस प्रवृत्ति को पुंजीवाद ने पूरा प्रोत्साहन दिया

(7.) बैंकों का विकास :—

यद्यपि मध्यकाल में उधार लेन-देन का कार्य किसी - न - किसी रूप में होता है। परंतु 16 वी शताब्दी में अनेक बैंकों की स्थापित हो गई है। तथा आवश्यकता के समय बैंकों से ऋण भी ले सकते

थे। वास्तव में पूंजीवाद तथा बैंक-प्रणाली एक-दूसरे के पूरक थे। बैंक प्रणाली ने पूंजीवाद का विकास किया था। तथा पूंजीवाद ने बैंक प्रणाली का।

8) नवीन प्रदेशों की खोज :—

कम्पास की खोज, बड़े जहाजों का चलन तथा यूरोपीय शासकों द्वारा नाविकों को प्रोत्साहन, पूंजीवाद के लिए प्रेरक तत्व बने। 15वीं तथा 16वीं शताब्दी में नाविकों ने नवीन प्रदेश खोज निकाले। अधिक माल के निर्यात से पूंजी का विस्तार आरम्भ हुआ था और आर्थिक लाभ के लिए अधिक पूंजी लगाई जाने लगी। इस प्रकार पूंजी का एक चक्कर आरम्भ हो गया।

9) संयुक्त पूंजी कम्पनी :—

संयुक्त पूंजी कम्पनियों के आरम्भ ने पूंजीवाद को पनपने का मयन् अवसर प्रदान किया नवीन प्रदेशों की खोज के कारण विशाल पैमाने पर विदेशी व्यापार की सम्भावनाएं बढ़ गई है परंतु कोई भी अकेला व्यक्ति इतनी अधिक पूंजी लगाने का जोखिम नहीं उठा सकता था तथा न ही वह अकेला इस व्यापार का संचालन कर सकता था। अतः कई लोगों ने मिलकर संयुक्त पूंजी कम्पनियों की स्थापना की तथा उसमें अपना-2 हिस्सा डाल दिया।

पूंजीवाद के प्रभाव

1) धन की बढ़ोत्तरी :— पूंजीवाद के उत्थान तथा विकास के कारण विभिन्न देशों की धन-दौलत में बहुत बढ़ोत्तरी हुई। पूंजीपति अधिक-से-अधिक धन कमाना चाहते थे। उनकी इन्हीं इच्छाओं के परिणामस्वरूप व्यापार और उद्योग बहुत विकसित हुए। इन देशों के धन में बहुत बढ़ोत्तरी हुई।

2) मजदूर वर्ग का उदय :— पूंजीपतियों एव व्यापारियों ने अपने माल के अधिक उत्पादन के लिए बहुत से श्रमिकों को अपने उद्योगों में काम पर लगाया। धीरे-धीरे इन श्रमिकों की संख्या बढ़ती हुई। अतः मजदूर वर्ग के रूप में एक नया वर्ग अस्तित्व में आया मजदूरों को काम करने के बदले में कम पैसे मिलते थे तथा मजदूरों का शोषण होने लगा

3) सामंती प्रथा को चोट :— मध्यकाल में यूरोप में सामंतवाद का बहुत बोलबाला था। पूंजीवाद के उत्थान से उसे गहरी चोट पहुंची। बहुत से समंत गांवों को छोड़कर नगरों में आ गया तथा व्यापारी बन गए। इससे गांवों में सामंतवादी व्यवस्था का महत्व कम हो गए। धीरे-2 सामंती प्रथा प्रथा का अंत हो गया।

4) जमींदारों की अनुपस्थिति :—

अधिकतर सामंतों के नगरों में बस जाने के कारण वे अपनी जमीन से दूर हो गए। इससे अनुपस्थित जमींदारी प्रथा का जन्म हुआ अतः उन्होंने अपनी जीवन गुजारों को ठेके पर देनी आरम्भ कर दी। इस कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था बहुत प्रभावित हुई।

5) पूंजीपतियों द्वारा सरकारों की समर्थन :—

पूंजीवाद के उदय ने विभिन्न देशों की राजनीतिक को भी बहुत प्रभावित किया विभिन्न देशों की सरकारें अब सामंतों की अपेक्षा पूंजीपतियों के समर्थन पर निर्भर रहने लगीं। सरकार भी उन्हें अपना समर्थन देती थी।

6) बस्तियों का आर्थिक शोषण :—

यूरोप के विभिन्न देशों की सरकारों ने अपने-2 देशों की संयुक्त पूंजी कम्पनियों को विदेशों के साथ व्यापार करने के एकाधिकार प्रदान किए हुए थे।

7) औद्योगिक क्रांति :—

पूंजीवाद के विकास के कारण व्यापार तथा उद्योगों का बहुत विकास हुआ इससे निर्मित वस्तुओं की मांग बढ़ी। इस मांग की पूर्ति के उद्देश्य से कई नवीन मशीनों का आविष्कार हुआ।

प्र03. कृषि क्रांति से क्या अभिप्राय है इसके प्रभाव लिखें ?

उ०-> भूमिका :—

कृषि क्रांति सबसे पहले इंग्लैंड में ही आई थी इस के पश्चात् इसका प्रसार फ्रांस, इटली, जर्मनी, डेनमार्क, हालैंड, इटली और स्पेन आदि यूरोप के पश्चिमी देशों में भी हो गया। इस क्रांति के लिए अनेक कारक जिम्मेदार थे जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुसार है —

कृषि क्रांति के लिए जिम्मेदार कारक

(i) दोषपूर्ण प्राचीन कृषि व्यवस्था :—

18 वीं शताब्दी में यूरोपीय देशों के अधिकतर लोग गांवों में ही रहते थे। उनका मुख्य व्यवसाय कृषि ही था। सभी गांवों के लोगों के खेती के ढंग पुराने तथा एक समान थे सभी किसान एक समय में एक जैसी ही फसल बोते थे उस समय गांव में तीन प्रकार की भूमि होती थी - कृषि योग्य भूमि, चरागाह तथा बंजर भूमि। कृषि योग्य भूमि किसानों की निजी भूमि होती थी सभी किसान एक ही स्थान पर अपने पशुओं को चरने के लिए भेज देते थे। उनमें छूत का रोग फैल जाते थे।

2.) जनसंख्या में वृद्धि :—

18 वीं शताब्दी में यूरोप में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि हुई। वास्तव में यह एक

क्रांतिकारी प्रक्रिया थी अनुमान के अनुसार 1700 ई० में यूरोप की जनसंख्या 118 मिलियन थी जोकि बढ़कर 1750 ई० में 140 मिलियन तथा 1800 ई० में 187 मिलियन हो गई जैसे इंग्लैण्ड की जनसंख्या जो 18वीं शताब्दी के आरम्भ में 5 मिलियन थी भारी मात्रा में जनसंख्या बढ़ने के कारण अन्य आवश्यक वस्तुओं की मांग बढ़ गई।

(3.) अमीर व्यापारियों का योगदान :—

18वीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप में व्यापार का अत्यधिक विकास होने के कारण वहां के व्यापारी बहुत अमीर हो गए और आर्थिक लाभ कमाने के लिए व्यापारियों ने अधिकतर पैसा गांव की भूमि पर लगा दिया इस प्रकार इन व्यापारियों ने कृषि क्रांति लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

4.) मूल्यों में वृद्धि :—

कृषि के क्षेत्र में क्रांति आने का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण अनाज तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि था मूल्यों में वृद्धि होने के कारण किसान अधिक अनाज उत्पादन के लिए प्रेरित हुए। अब लोग अधिक भौतिकवादी हो गये थे तथा उन्होंने परलोक के बारे में सोचना छोड़ दिया था अब वह वर्तमान जीवन को ही सुखी ढंग से व्यतीत करते थे।

कृषि क्रांति के प्रभाव

1.) छोटे किसानों का अंत :—

कृषि क्रांति से इंग्लैण्ड में छोटे छोटे किसानों का अंत कर दिया। ये किसान छोटे-छोटे भू-खण्डों के स्वामी होते थे तथा उनके पास कोई विशेष धन भी नहीं होता था धन के अभाव के कारण ये किसान नए औजार तथा मशीनें आदि नहीं खरीद सकते थे। वे किसान भूमि-हीन होने पर नगरों में आ बसे तथा वहां मजदूरी करने लगे।

2.) भूमि की कीमत में वृद्धि :—

कृषि क्रांति के कारण भूमि की मांग बहुत बढ़ गई जिससे इसकी कीमत में वृद्धि हो गई। परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड तथा अन्य यूरोपीय देशों में भूमि का आर्थिक महत्व के साथ-साथ राजनीतिक तथा सामाजिक महत्व भी बढ़ गया उदाहरणस्वरूप 1832 ई० से पहले इंग्लैण्ड की संसद में भूस्वामियों का ही प्रभुत्व था। अमीर जमींदारों ने भारी मूल्य देकर निर्धन किसानों से भूमि खरीद ली।

3.) उत्पादन में वृद्धि :—

इससे उत्पादन बहुत कम होता था। कृषि क्रांति आने पर उन्होंने कृषि के नवीन ढंग अपनाए जिससे उत्पादन में वृद्धि हो गई। अब वे बढ़िया, मशीनों, उत्तम बीजों आदि का प्रयोग करने लगे

उत्पादन बढ़ने के कारण लोगों की नित्य की आवश्यकताओं की पूर्ति होने लगी तथा उनके पास धन - सम्पत्ति भी इकट्ठी होने लगी।

4) ग्रामीण समुदाय व्यवस्था का अंत :—

मध्यकाल में सभी गांवों में सभी ग्रामीण मिलकर संयुक्त कृषि करते थे। परंतु कृषि क्रांति के पश्चात् यह व्यवस्था बिल्कुल समाप्त हो गई तथा अब कृषि व्यक्तिगत हो गई परंतु कृषि क्रांति के कारण यह सामूहिक कृषि व्यवस्था बिल्कुल समाप्त हो गई। अब किसान व्यक्तिगत कृषि करने लगे थे तथा उन्होंने कृषि के नवीन ढंगों को अपना लिया था।

5) किसानों का उच्च जीवन स्तर :—

इस क्रांति के कारण जहां बड़े - बड़े जमींदार अधिक धनी हो गए वहां किसानों की आय में भी वृद्धि हुई और उनका जीवन स्तर ऊंचा हो गया वे शराब भी पीते थे शिकार पर जानने के लिए अच्छे घोड़े होते थे। इन किसानों की आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार आ गया था।

6) अन्य देशों में किसानों पर प्रभाव :—

कृषि क्रांति का इंग्लैण्ड के किसानों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा था फ्रांस, जर्मनी, हालैण्ड, डेनमार्क आदि देशों के किसान इस क्रांति के कारण

सांमतों के चंगुल से मुक्त हो गए एक ओर जहां इंग्लैण्ड के जमींदारों ने किसानों को भूमि से बेदखल कर दिया वहीं दूसरी तरफ धीरे - धीरे इन किसानों ने कृषि के नवीन ढंग अपनाने आरम्भ कर दिए।

7) बेरोजगारी तथा गरीबी :—

कि वे बेरोजगारी हो गए। रोजगार छिन जाने के कारण वे बहुत गरीब हो गए क्रांति से पूर्व गांवों में सभी लोग अमीर तथा गरीब - मिलकर कृषि कार्य करते थे। इस कारण गरीब लोग काम पर लगे रहते थे तथा उनका जीवन निर्वाह अच्छा हो जाता था इन मजदूरों को बहुत कम वेतन दिया जाता था परिणामस्वरूप उनकी स्थिति बहुत दयनीय हो गई

8) बंजर भूमि का कृषि योग्य बनना :—

कृषि क्रांति से पूर्व किसान बहुत सारी भूमि खाली छोड़ देते थे यह बेकार भूमि लाखों एकड़ में होती थी। कृषि क्रांति आने पर बेकार पड़ी भूमि को कृषि योग्य बनाने के भरपूर प्रयत्न किए गए दलदली एवं रेतीली भूमि में चूने - मिट्टी की खाद डाली गई। इन सब उपायों के परिणामस्वरूप लाखों एकड़ बेकार पड़ी भूमि को कृषि योग्य बनाया जा सका।

प्रश्न 4.) औद्योगिक क्रांति से आप क्या समझते हैं इसके प्रभावों का वर्णन करें।

उ०→ **भूमिका :—**

अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप महाद्वीप ने औद्योगिक क्षेत्र में असाधारण उन्नति की इसके परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड तथा कुछ यूरोपीय देशों में बड़े-बड़े कारखाने स्थापित हुए और वस्तुओं का उत्पादन बढ़ा। अब बहुत से ऐसे कार्य जो पहले हाथों से होता था अब मशीनों के द्वारा होता है बैंक व्यवस्था का विकास हुआ। गाँव में रहने वाले लोग एक भारी संख्या में औद्योगिक केन्द्रों को निकट आ बसे जिससे बड़े बड़े नगर अस्तित्व में आए।

औद्योगिक क्रांति के प्रभाव

सामाजिक प्रभाव

(i) **जनसंख्या में असाधारण वृद्धि :—**

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप यूरोपियन देशों की जनसंख्या वृद्धि हुई उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में यूरोप महाद्वीप की कुल जनसंख्या 17½ करोड़ थी जर्मनी, इटली, फ्रांस की जनसंख्या में भी इसी प्रकार वृद्धि हुई ऐसी परिस्थितियों में मृत्यु दर कम हुई और जनसंख्या बढ़ी।

(2.) **बड़े शहरों व औद्योगिक कस्बों में वृद्धि :—**

औद्योगिक क्रांति के कारण यूरोप के लगभग 70% लोग गाँव छोड़कर नगरों में आ बसे। इसलिए कि उन्हें शहरी जीवन में धन कमाने, शिक्षा प्राप्त करने, आनन्द मनाने व उन्नति करने की सुविधाएँ प्राप्त हुईं जबकि सौ साल बाद उनकी संख्या 170 हो गई इंग्लैंड में लंकाशायर, मानचेस्टर तथा लीड्स आदि औद्योगिक कस्बे अस्तित्व में आए। शहरों में बसने से लोगों का मानसिक विकास भी हुआ।

(3.) **रहन-सहन के स्तर में उन्नति :—**

उद्योगपतियों की शोषण नीति के कारण आरम्भ में तो अधिकांश यूरोपियनों के रहन-सहन का स्तर ऊँचा न हो सका लेकिन 1870 ई० के बाद धीरे-धीरे उनके रहन-सहन में उन्नति हुई अच्छे मकान, नहाने के लिए स्वच्छ जल, जलाने के लिए कुकिंग गैस तथा रोशनी के लिए बिजली आदि ऐसी सुविधाएं प्राप्त हुईं जिन से घरेलू जीवन सुखी हो गया।

4.) **विशाल दृष्टिकोण :—**

अविष्कारों ने औद्योगिक क्रांति के इस काल में लकड़ी के गूदे का सस्ता कागज तैयार करने में सफलता प्राप्त की। बिजली से चलने वाली प्रिंटिंग प्रेस का भी इस काल में अविष्कार हुआ परिणामस्वरूप जन-साधारण को

सस्ते समाचार - पत्र मिलने लगे।

5) स्त्री जाति की स्थिति में सुधार :— क्रांति से पूर्व स्त्री का मुख्य कार्य बच्चों को जन्म देना, उनको पालना, सिलने - पिरोने व खाने सम्बंधी घरेलू कार्य ही होता था। पुरुष की आय पर आश्रित होने के कारण उनका समाज में पुरुष के समान दर्जा नहीं था परंतु औद्योगिक क्रांति के आरम्भ होने पर स्त्रियां भी कारखानों व खानों में काम करने लगीं। जिससे उनकी पुरुष निर्भरता कम हुई सामाजिक दृष्टि से यह निश्चय ही औद्योगिक क्रांति का एक बहुत बड़ा परिणाम था

6) प्रभावशाली पूंजीपति मध्यवर्ग — औद्योगिक क्रांति से पूर्व यूरोप के लगभग सभी देशों में भूमिपति धनवान लोग समझे जाते थे। उनका समाज में बड़ा सम्मान तथा प्रभाव था परंतु औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप मध्यवर्ग ने उनका स्थान ले लिया इसके अतिरिक्त हजारों क्लर्क और अन्य कर्मचारी उनके दफ्तरों में काम करते थे। कारखाने बंद होने पर हजारों लोगों के लिए रोटी की समस्या उठ खड़ी होना स्वाभाविक था।

7) शोषण, परेशानी तथा पीड़ा — औद्योगिक क्रांति के आरम्भिक वर्षों में स्थिति उद्योगपतियों के पक्ष में थी। इसलिए कि प्रसिद्ध एडम स्मिथ ने यह विचार लोकप्रिय बना दिया था बच्चों और स्त्रियों से चौदह या सोलह घण्टे प्रति - दिन काम लिया गया उन्हे गंदी तथा अंधेरी फैक्टरियों में काम करना पड़ा इतना ही नहीं उन्हे फैक्टरियों के निकट गंदी बस्तियों में रहना पड़ा

8.) मजदूर संघों की स्थापना — उद्योगपतियों के शोषण से बचने के लिए मजदूरों ने अपने को संगठित करने की आवश्यकता अनुभव की। इंग्लैंड पहला देश था जहां 1824 - 25 में सरकार ने मजदूरों को संघ बनाने की आज्ञा दी। रॉबर्ट ओवन के उद्यम से 1834 ई० में ग्रेट नेशनल कन्सॉलिडेटेड ट्रेड यूनियन की स्थापना हुई। 1873 ई० तक इंग्लैंड के मजदूर संघों के दस लाख सदस्य थे

आर्थिक प्रभाव

(1) वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि — औद्योगिक क्रांति से पूर्व वस्तुओं को हाथों से बनाया जाता था अतः वस्तुएं बनाने में बहुत समय लगता था और उन्हे भारी संख्या में बनाना सम्भव भी नहीं था अब मशीनों

द्वारा वस्तुओं को न केवल बड़ी संख्या में बनाना सम्भव भी नहीं था परंतु अब मशीनों द्वारा वस्तुओं को न केवल तैयार किया जाता था परंतु अब विदेशों में भी यूरोप के कारखानों में तैयार होने वाली वस्तुओं की मांग बढ़ी।

2) पुराने उद्योगों का विकास एवं नये उद्योगों की स्थापना —

औद्योगिक क्रांति का मूल आधार कोयले, लोहे के कपड़े के उद्योग थे नये अविष्कारों के बल पर इन उद्योगों को विकसित किया गया परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड, फ्रांस जर्मनी आदि सभी देशों में कोयले तथा लोहे के उत्पादन में वृद्धि हुई। इन देशों में कपड़े का भी उत्पादन बढ़ा इंजीनियरिंग इण्डस्ट्री घरेलू जीवन को सुखी बनाने में सहायक सिद्ध हुई।

3) नई अर्थ-व्यवस्था तथा परस्पर विरोधी —

यूरोप की औद्योगिक क्षेत्र में बड़ी तेजी 1870 ई० से के बाद उन्नति हुई। परिणामस्वरूप उद्योग-धंधों के लिए धन की आवश्यकता बढ़ी। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए उद्योगपतियों ने वस्तुओं स्टॉक कम्पनियां स्थापित की। जर्मनी में इस प्रकार के कार्य करने वाली संस्थाएं कारटल कहलाई अन्य देशों में ऐसी संस्थाएं को ट्रस्ट का नाम दिया गया है।

4) यातायात एवं संचार के साधनों का विकास — औद्योगिक क्रांति के इस काल में यातायात व संचार के साधन भी विकसित हुए। 1870-1914 ई० के बीच जर्मनी, रूस, फ्रांस आदि देशों में हजारों मील लम्बी रेल लाईन्स बिछ गईं 1871 ई० में उन्होंने एल्पस पर्वत में से सुरंग निकलकर फ्रांस और इटली को रेल द्वारा मिला गया इस साल बाद एक और सुरंग द्वारा इटली और जर्मनी में सम्पर्क जुड़ा।

5) आर्थिक साम्राज्यवाद — औद्योगिकरण की नीति अपनाने वाले देशों को विवश होकर आर्थिक साम्राज्यवाद की नीति को अपनाना पड़ा इसलिए उन्होंने धीरे धीरे इतना माल तैयार करना शुरू कर दिया जिसकी खपत देश में होनी सम्भव नहीं थी। अतः उन्होंने हैसी मण्डियों की तलाश शुरू कर दी बस्तियों की होड़ आपसी संघर्ष और प्रथम महायुद्ध का कारण बनी।

6) अन्न के लिए निर्भरता — औद्योगिक राज्यों ने निस्सन्देह उद्योग-धंधों द्वारा काफी धन कमाया। वे संसार के धनी एवं शक्तिशाली राष्ट्र बन गए। लेकिन उनमें अन्न की कमी हो गई। फ्रांस और जर्मनी को काफी अन्न बाहर से मंगवाना पड़ता था इंग्लैण्ड को आवश्यक अन्न का 80% विदेशों से मंगवाना पड़ता था।

7) नौकरियां —

औद्योगिक क्रांति के कारण हाथों का काम मशीनों द्वारा होने लगा। परिणामस्वरूप एक व्यक्ति मशीन द्वारा उतना काम करने लगा जितना कि इससे पूर्व चालीस आदमी करते थे लेकिन इसके साथ ही औद्योगिक क्रांति से नये धंधे भी शुरू हुए। इन धंधों को करने के लिए मानव शक्ति की आवश्यकता पड़ी।

राजनीतिक प्रभाव

(i) धनवान एवं शक्तिशाली राज्यों का उदय →

औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम आदि देश शक्ति बन गए क्योंकि उनके पास लोहे व कोयले के अनन्त भण्डार थे। उन्होंने इन उद्योगों का बड़े परिश्रम से विकास से किया। तीसरे उनके पास पूंजी की कमी नहीं थी। 1913 ई० में संसार के कुल व्यापार का 50% इन प्रमुख छः राज्यों के आयात निर्यात पर निर्भर करता था।

(ii) विश्व राजनीति का युग →

1870 ई० के बाद यूरोप के सभी एवं शक्तिशाली राज्य ने साम्राज्यवादी नीति को अपनाया उन्होंने यूरोप के बाहर के पिछड़े धीरे - धीरे अपने बस्तियों का अपना विस्तार किया जिसमें अपनी अपनी जनसंख्या से दस गुना लोग बसे हुआ था। फ्रांस की

प्र०5) इटली का योगदान एकीकरण केवूर लिखो ?

उ०→ भूमिका —

फ्रांस की क्रान्तिकारी से पूर्व छोटे - छोटे राज्यों में बंटा हुआ थे सभी राज्य विदेशी राजाओं के अधीन थे। वास्तव में इटली एक भौगोलिक मात्र था। यहाँ की जनता निरक्षर, कमजोर अन्धविश्वासों को मानने वाली थी। फ्रांस की क्रान्ति के विचारों तथा नेपोलियन के इटलीवासियों में राष्ट्रीय भावना जाग्रत हुई। मैटरनिख इटली की एकता का घोर शत्रु था। उसने वियना कांग्रेस में इटली को पुनः उनके राज्यों में बांट दिया। परन्तु कालान्तर में इटली का एकीकरण सार्डीनिया राज्य के अधीन विभिन्न चरणों में हो गया। इनका वर्णन निम्नलिखित है

इटली का एकीकरण

(i) एकीकरण का प्रथम चरण →

इटली के एकीकरण के प्रथम चरण के अन्तर्गत इटलीवासियों में राष्ट्रीयता जाग्रत का विकास हुआ 1815 की वियना-कांग्रेस में इटली के देशभक्त की भावनाओं का किसी ने आदर न किया इटली के लोगों ने 1820 ई० 1821 ई० से 1830 ई० में क्रान्ति द्वारा निरंकुश शासन से छुटकारा पाने का प्रयास किया परन्तु इटली के लगभग सभी राजाओं को पीठ पर था। आस्ट्रिया उन दिनों मैटरनिख की प्रतिक्रियावादी नीति से चल रहा

था। जब कभी किसी भी राज्य में जनता विद्रोह को झण्डा फहराती आस्ट्रिया जनता उन्हें कुचल डालती। आस्ट्रिया वास्तव में 1815 ई० में वैध अधिकार सिद्धान्त पर चल रहा है। वह राज तंत्रों को बदलना चाहता था। परन्तु 1848 के पलायन के पश्चात इटली की स्वाधीनता संग्राम एकीकरण की गति तीव्र हो गई। उनके साहित्यकारों तथा राजनीतिकारों लेखकों ने लोगों में क्रान्ति के भाव जाग्रत हुए उन्होंने संयुक्त इटली की आवश्यता से अवगत किया है उन्होंने लोगों को यह बताने का प्रयास किया कि इटली एक भौगोलिक अभिव्यक्ति न होकर एक राष्ट्र है।

(2) एकीकरण का दूसरा चरण →

एकीकरण के दूसरे चरण का नायक सार्डिनिया के शासक विक्टर इमैनुअल द्वितीय का प्रधानमंत्री कैवूर था। वह उच्चकोटि का राजनीज्ञ था। वह कल्पना में पता लगा लेता था कि किस मार्ग में अधिक कठिनाइयां आयेंगी। उन्हें किस प्रकार से सुलझाया जा सकता है। उसे मालूम था कि एकीकरण के मार्ग में मात्र बाधा आस्ट्रिया है और सार्डिनिया को शक्तिशाली बनाकर ही इसे हटाया जा सकता है। शक्तिशाली बनने के लिए विकास और अधिक सेना की आवश्यकता होगी। आस्ट्रिया का सामना करने

के लिए यूरोप का किसी शक्ति का अनिवार्य था। कैवूर ने अपनी योजनाएं लागू करने को अनिवार्य किया था। उसने अपनी जनता को सुखी बनाए रखने के लिए अनेक पग उठाया (i) - लोगों के विकास के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की (ii) रेलवे का विस्तार किया। (iii) - शिक्षा की प्रगति लिए उचित पग उठाया (iv) कृषि विकास की संभावना को विकास दिया। (v) विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित किया। इस प्रकार सार्डिनिया का राज्य शीघ्र ही धन से परिपूर्ण हो गया। कैवूर ने इस राज्य की सैनिक शक्ति में भी विकास किया। इटली के लोग भी इस निष्कर्ष पर पहुँच गए कि इमैनुअल तथा उनका प्रधानमंत्री कैवूर ही समस्त इटली का कल्याण कर रहे हैं। फिर अन्दर ही - अन्दर किसी बड़े राज्य की सहायता का आस्वासन लिया। गुप्त रूप में विदेशी सहायता मिल जाने के बाद ऐसी राजनीतिक परिस्थिती बना दी गई कि आस्ट्रिया विवश होकर सार्डिनिया के विरुद्ध युद्ध लिए तैयार हो जाए। कैवूर को यूरोपियन राज्यों की सहानुभूति प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो जाए। यह प्रथम अवसर 1856 ई० में मिला। उसने क्रीमिया के युद्ध में इंग्लैण्ड तथा फ्रांस का साथ दिया इससे सार्डिनिया की प्रतिष्ठा में काफी वृद्धि हुई इंग्लैण्ड और फ्रांस सार्डिनिया के प्रति अपने

अपनी इच्छा समझने लगी।
क्रीमिया युद्ध का अन्त 1856 ई० में पेरिस
में सन्धि से हुआ

3. एकीकरण का तीसरा चरण →

एकीकरण से बचे
सिसली दोनों राज्य तथा नेपल्स में से ये
सबसे अलग हुआ। इस राज्य का शासक
फ्रांसिस द्वितीय बूर्बो वंश से संबंधित था।
यह एक प्रतिक्रियावादी तथा अत्याचारी शासक
था। वहाँ लोगों को उसके अत्याचारों से
मुक्त करने का कार्य गैरीबाल्डी ने किया।
1860 ई० के आरम्भ में इस कार्य में सिसली
में जनता ने क्रिस्पी नेतृत्व में विद्रोह
कर दिया। क्रिस्पी ने गैरीबाल्डी से सहायता
मांगी। गैरीबाल्डी उस समय सार्डीनिया राज्य
के कापरेरा द्वीप में रहता था। गैरीबाल्डी
अपने लाल वर्दी वाले सैनिकों के साथ
मई को सिसली द्वीप में उतरा
11 तुरन्त 1860 ही क्रान्तिकारी गैरीबाल्डी के
झण्डे तले आ गया।
फ्रांसिस द्वितीय के पास सिसली में ही
चौबीस हजार सैनिक थे, परन्तु गैरीबाल्डी
के सैनिकों ने नेपल्स की सेना को
कई बार लड़ाइयों में बुरी तरह हराया।
इस प्रकार लगभग दो मास में ही सारा
सिसली गैरीबाल्डी के अधिकार में आ गया।

4. एकीकरण का चौथा चरण → अब केवल वेनेशिया
और रोम ही इटली राज्य से बाहर थे।
वेनेशिया में ऑस्ट्रिया का राज्य था और
पर पोप का अधिकार था। 1866 ई० में प्रशिया
तथा आस्ट्रिया का राज्य था और रोम पर पोप पहले वेनेशिया
का अधिकार था। इन दोनों में से पहले इमेनुएल ने
की बारी आई इस युद्ध में इटली की सेनाएं कस्टोजा
प्रशिया का साथ दिया इटली की
के स्थान पर पराजित हुईं। प्रशिया और
सेनाएं में 23 अगस्त 1866 ई० में प्राग की संधि
हुई। इस प्रकार एकीकरण के इस चरण ने
इटली से आस्ट्रिया के प्रभुत्व को समाप्त कर दिया

5. एकीकरण का पांचवा और अन्तिम चरण → रोम
की रक्षा के लिए वहाँ की सेना मौजूद थी,
परन्तु इटली फ्रांस से युद्ध करना ठीक नहीं
समझता था। आखिर इटली का भाग्य जाग
ही उठा। 1870 ई० में प्रशिया और फ्रांस
में युद्ध छिड़ गया। प्रशिया से निपटने
के लिए नेपोलियन तृतीय ने रोम से
भी अपनी सेनाएं बुला। विक्टर इमैनुएल ने
इस परिस्थिति का लाभ उठाकर सितम्बर
1870 ई० को रोम पर आक्रमण कर दिया
उसने आसानी से पर अधिकार कर
लिया। वहाँ जनमत गणना कराई गई और

रोम भी इटली मे मिला दिया गया। 1870 ई० मे रोम पर आधिकार राजधानी बनाया। 1871 इस प्रकार कॉवूर की भविष्यवाणी सत्य निकली "मेरा विश्वास है कि इटली एक राज्य बनेगा और रोम उसकी राजधानी होगी रोम मे पोप का स्थान बना रहने दिया

प्र० 30 1789 ई० की फ्रांसीसी क्रान्ति के कारण और प्रभाव लिखिए।

भूमिका →

फ्रांस की क्रांति के शासक लुई सोलहवें 1789 ई० को बूर्बो वंश हुई। उस समय भी फ्रांस राजकाल मे मुख्य पर पड़ा था। तत्कालीन ज्वालामुखी की आर्थिक तथा बौद्धिक अवस्था ऐसी समाजिक, खड़ी थी कि क्रान्ति की आग कगार पर भड़क सकती थी। शीघ्र ही कभी भी सिद्ध हुई। फ्रांसीसी क्रान्ति के लिए यह बात राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा बौद्धिक उत्तरदायी का वर्णन निम्नलिखित है। कारण

राजनीतिक कारण

राज्य पद की प्रतिष्ठा का ह्रास →

फ्रांस का योग्य एवं शक्तिशाली लुई चौदहवां असने अपने शासन काल मे शासक था। प्राप्त की थी। इस से महान सफलताएं राज्य की

शक्तियाँ दृढ़ हो गई। फ्रांस का महाद्वीप सम्मान बढ़ा प्रजा के मे महान आदर - भावना उत्पन्न हुई परन्तु लुई चौदहवें की कुछ गलतियाें एवं उनके उत्तराधिकारी की दुर्बल शासक नीति के कारण राज्य पद की प्रतिष्ठा स्थिर न रह सकी। प्रजा की राज्य शक्ति धीरे धीरे शिथिल होती गई। आधिकारी वर्ग शक्तिशाली वर्ग बन गया। फ्रांस के उच्च आलम तो विशेष कर इतने शक्तिशाली हो गए की राजा के लिए उनके विरोध का सामना करना कठिन हो गया। इस पर भी स्थिति इतनी गंभीर नही थी

2. दोषपूर्ण राजनीतिक प्रणाली →

लुई चौदहवें ने जिस प्रणाली का सूत्रपात किया था, उसमे राजा को राज्यसत्ता का पूर्ण आधिकार था। जनता के प्रतिनिधियों का इसमे कोई स्थान नही था परन्तु नई विचारधाराओ का प्रसार होने पर जनता के प्रतिनिधि का किसी - न - किसी रूप मे शासन कार्य में भागीदार होना जरूरी हो गया है। महाद्वीप की शासको ने कुछ शासकों ने समय की आवश्यकता को अनुभव करते हुए इस सम्बंध मे कुछ उपयोगी पग उठाए थे। अत: किसी भी समय जनता की ओर से इसका विरोध सम्भव था।

3.) प्रशासनिक अव्यवस्था →

राजपद की प्रतिष्ठा का ह्रास होने से शासन प्रबंध में अकुशलता का होना स्वाभाविक है फ्रांस में भी राज्य क्रांति से पूर्व शासन प्रबंध के प्रत्येक क्षेत्र में अव्यवस्था का बोलबाला था। राज्य में अधिकारियों की संख्या आवश्यकता से अधिक थी देश में 360 के लगभग कानूनी संहिताएं प्रचलित थीं।

4) शाही परिवार के फिजूल खर्ची →

लुई चौदहवें के शासन काल में ही फ्रांस के राजा बड़ा वैभवशाली तथा विलासपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे पेरिस से बाहर मील दूर वर्साय स्थित एक सदुर राजमहल में रहते थे जो तीस करोड़ रुपये खर्च करके बनाया गया था लुई सोलहवां भी अपने पूर्वजों की भांति सदुर महल में शान-शौकत से रहता था राजा रानी को लिये पाँच सौ सेवक-सेविकाएं थी तथा छः करोड़ रुपये से कम नहीं बल्कि अधिक-से-अधिक पैसा भोग-विलास व शाही शानो-शौकत में खर्च कर देती थी इसी प्रकार फ्रांस के लोग राजदरबार को फ्रांस की कब्र कहा जाता था

5) दोषपूर्ण सैनिक प्रबंध —

फ्रांस में राज्य-क्रांति से पूर्व फ्रांसीसी सैनिकों में बड़ा असंतोष था। सैनिकों

के रूप में भर्ती होने वाले युवक साधारण परिवार से होते थे जिन्हें कठोर अनुशासन, कम वेतन व घटिया भोजन के कारण कष्टमय जीवन व्यतीत करते थे कि वे योग्य होने पर भी सेना में उच्च पद प्राप्त नहीं कर सकते थे कि सेना के सभी उच्च पद कुलीन वर्ग के अधिकार में थे। 1760 ई० के बाद तो मध्य वर्ग के लोगों को सेना में उच्च पद प्राप्त करना सम्भव नहीं रहा

6) रानी मेरी एंतोयनेत का कुप्रभाव —

लुई सोलहवें की रानी मेरी एंतोयनेत भी उच्च सत्ता तथा सम्मान की पात्र नहीं थी जो उसे प्राप्त था यद्यपि उसे शासन के सम्बंध में कोई अनुभव नहीं था वह राजा की मुख्य सलाहकार थी प्रजा में ऐसा विश्वास था कि राजा का प्रत्येक निर्णय वास्तव में रानी का ही निर्णय है और वह राजा के निर्णय को रद्द भी कर सकती है क्योंकि फ्रांस और आस्ट्रिया में पुरानी शत्रुता थी।

सामाजिक कारण

(i) कुलीन वर्ग की अप्रियता —

फ्रांस का समाज उन दिनों तीन श्रेणियों में विभक्त था - पादरी, जागीरदार व जनसाधारण। पादरी व जागीरदार फ्रांस की जनसंख्या का केवल

था थे और वे कुलीन वर्ग में आते थे लेकिन देश की सम्पत्ति का बहुत बड़ा भाग उनके पास था। इन दो श्रेणियों को विशेष अधिकार भी प्राप्त थे जनसाधारण में कुलीन वर्ग की यह अप्रियता फ्रांस राज्यक्रांति का महत्वपूर्ण कारण सिद्ध हुई।

२.) कृषकों की दयनीय अवस्था —

फ्रांस की जनसंख्या 80% लोग किसान थे। उनकी आर्थिक दशा केन्द्रीय एवं पूर्वी यूरोप के किसानों की आर्थिक दशा से कुछ अच्छी थी। परंतु इस पर भी वे असंतुष्ट थे। जिन्हें कम भूमि के कारण पेट भर कर खाना भी नसीब नहीं होता था भूमिहीन किसानों की दशा तो बड़ी दयनीय थी। फ्रांस में बड़े-2 फार्म बनने पर वे चारे, ईंधन एवं अन्य सम्बंधी सुविधाएँ से वंचित हो गये थे।

3) मध्यवर्ग की बढ़ती हुई शक्ति तथा महत्वकांक्षा —

फ्रांस में व्यापार तथा उद्योग में उन्नति होने पर से समाज में मध्य वर्ग नामक एक नये वर्ग का जन्म हुआ था इस वर्ग में न केवल धनी व्यापारी एवं उद्योगपति ही थे अपितु प्रभावशाली वकील, डॉक्टर, इंजीनियर व राज्याधिकारी भी थे

4.) मजदूर वर्ग की दयनीय दशा —

फ्रांस में भी इंग्लैण्ड की भांति औद्योगिक क्रांति आरम्भ हो चुकी थी। इन उद्योगों में 25 लाख के करीब मजदूर कार्य करते थे उनकी दशा अत्यंत सोचनीय थी इनको कम वेतन मिलता था काम की अवधि भी काफी अधिक थी। यह वर्ग नगरों में रहता था इसमें राजनीतिक चेतना थी।

5) गहरे सामाजिक भेदभाव व आपसी तनाव —

फ्रांस की राज्यक्रांति से पूर्व फ्रांसीसी समाज में गहरे भेदभाव उत्पन्न हो चुके थे जिससे सामाजिक तनाव बढ़ गया था कि जहां बड़े-2 जागीरदार धनी होने के कारण विलासमय जीवन व्यतीत करते थे वहां गांव में बसने वाले छोटे भूमिपति एवं कृषक मुश्किल से जीवन निर्वाह करते थे। कि कुलीन वर्ग के सदस्य मध्य वर्ग के किसी भी व्यक्ति को, भले ही वह धनी वर्ग व्यापारी व उद्योगपति ही क्यों न हो, को उच्च पद पर नियुक्त पसंद नहीं करते थे

आर्थिक कारण

(1) सरकार की आर्थिक दुर्बलता —

लुई सोलहवें के सिंहासनारूढ होने से पूर्व ही फ्रांस की सरकार दिवालिया हो चुकी थी। लुई चौदहवें ने तीस साल तक युद्ध लड़े थे जिनमें राज्य का अपार धन व्यय हुआ

उनकी मृत्यु पर फ्रांस की सरकार को अपनी वार्षिक आय का सोलह गुणा अधिक धन सार्वजनिक ऋण के रूप में देना था दुर्भाग्यवश फ्रांस को इंग्लैंड के विरुद्ध सप्तवर्षीय युद्ध में भी काफी धन खर्च करना पड़ा।

2) धन का असमान वितरण —

फ्रांस की राज्यक्रांति से पूर्व फ्रांस एक धनी देश था इसका विदेशी व्यापार चार गुणा बढ़ गया था औद्योगिक क्षेत्र में भी देश उन्नति कर रहा था फ्रांस की इस खुशहाली का लाभ केवल उच्च वर्ग के पादरियों, बड़े-2 जागीरदारों, व्यापारियों तथा उद्योगपतियों तक ही सीमित रहा था आर्थिक दृष्टि से समाज का यह विभाजन किसी भी समय संकट का कारण बन सकता था।

3) सरकार की कृषि सम्बन्धी नई नीति —

कि केवल कृषि ही राष्ट्रीय धन में वृद्धि करने का सर्वोत्तम साधन है इसका विकास करके देश को अकाल के प्रकोप से बचाया जा सकता है सरकार की कृषि सम्बन्धी इस नई नीति ने उनके असंतोष को और अधिक बढ़ा दिया परिणामस्वरूप क्रांति का विस्फोट और निकट आ गया।

4) दोषपूर्ण कर व्यवस्था —

यहां के बड़े बड़े जागीरदार तथा उच्च पादरी करों से मुक्त थे परिणामस्वरूप करों का सारा भार निम्न वर्ग पर था। करों में भी कई प्रकार के क्योंकि प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष कर आते थे करों को इकट्ठा करने वालों का फारमर्ज कहा जाता था वे उचित - अनुचित तरीकों से अधिक कर उगाहने की ताक में रहते थे।

धार्मिक कारण

(1) उच्च वर्ग के पादरियों में भ्रष्टाचार —

फ्रांस की उच्च वर्ग के पादरियों या महंतों, बिशप, आर्क बिशप, एबट की संख्या लगभग 6000 थी। उनकी वार्षिक आय दस करोड़ डालर के करीब थी। अब ये महंत इस धन को मद्यभोजों व मदिरापन में उड़ा देते थे इससे अधिक निराशाजनक बात यह थी कि बहुत-से महंतों को ईश्वर में कोई विश्वास नहीं था इस पर भी वे चर्च के उच्च पदों पर विराजमान थे।

2.) निम्न स्तर के पादरियों के साथ अन्याय —

उनकी संख्या एक लाख से अधिक थी। ये लोग गांवों में

रहते थे और धार्मिक कर्म-काण्ड के साथ-साथ ग्रामीण बच्चों को भी पढ़ाते थे। कठोर परिश्रम करने पर भी उन्हें भर-पेट खाना नहीं मिलता था इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था के कारण उनमें काफी असंतोष था और जनसाधारण को उनसे सहानुभूति थी।

फ्रांसीसी दार्शनिक

(i) मांटेस्क्यू —

मांटेस्क्यू फ्रांस का एक दार्शनिक था। उसने इंग्लैण्ड की राजनीतिक प्रणाली की प्रशंसा करके अपने देशवासियों को यह प्रभावित किया कि फ्रांस की निरंकुश शासन सर्वथा निकम्मा है यह न तो कल्याणकारी है और न ही इससे न्याय की आशा की जा सकती है उसने राजा के दैवी अधिकारों की निंदा की और उसका मजाक भी उड़ाया उसने संवैधानिक शासन पर बल दिया उसने 1721 ई० में पर्शियन लैटर्स तथा 1748 ई० में स्पिरिट ऑफ दि लॉज नामक दो प्रसिद्ध पुस्तकों रचना की। कि शासन की तीन शक्तियां वैधानिक, न्यायपालिका तथा कार्यपालिका - अलग-अलग हाथों में होनी चाहिए।

2) वाल्टेयर —

वाल्टेयर ने कोई नया सिद्धांत प्रस्तुत

इंग्लैण्ड उन्नत होकर ... से हुआ था औद्योगिक साम्राज्यों के स्थापित होने पर यूरोप महाद्वीप का इतिहास न रहा। अब विश्व की राजनीति में भी भाग लेने लगा

(iii) नौकरशाही शासन का विस्तार — औद्योगिक क्रान्ति के कारण सैकड़ों गाँवों की जनसंख्या कम हुई और कई नये शहर बसे। लन्दन, पेरिस आदि प्रमुख नगरों की जनसंख्या धीरे-धीरे दस लाख से भी बढ़ गई। परिणामस्वरूप सरकार को इन नगरों पर, व्यवस्थादि की बनाने की आवश्यकता अनुभव हुई। ऐसी परिस्थिति में सरकार का कार्य बढ़ने से उसकी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ीं।

4) मजदूर वर्ग के आंदोलन — औद्योगिक क्रांति के कारण हजारों मजदूरों को एक साथ काम करने तथा रहने का अवसर मिला। इस आपसी मेल-जोल से उनमें जागृति आई। जब इंग्लैण्ड और फ्रांस के मध्यवर्ग को राजनीतिक अधिकार प्राप्त हुए तो मजदूरों में भी इन अधिकारों को प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न हुई। इंग्लैण्ड के मजदूर वर्ग ने 1838-48 के बीच इस सम्बन्ध में आंदोलन चलाया।

5) नये राजनीतिक सिद्धांत — औद्योगिक क्रांति के कारण औद्योगिक राज्यों में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं

राजनीतिक समस्याएं उत्पन्न हो गई। इन्हे हल करने के लिए समकालीन विचारकों ने अपने अपने सिद्धांत प्रस्तुत किए। इन सिद्धांतों मे से समाजवाद का सिद्धांत अधिक महत्वपूर्ण था। जिससे सारी प्रजा का कल्याण हो। इसके अतिरिक्त वे लोकतंत्रीय सरकार के समर्थक थे और मजदूरों की दशा पर बल देते थे

6) सैनिक संगठन मे परिवर्तन —

औद्योगिक क्रांति के कारण यूरोपियन राष्ट्रों के सैनिक संगठन मे भी क्रांति हुई पुरानी तोपों के स्थान पर नई तोपे प्रचलित हुई 1867 ई० मे प्रशा ने एक ऐसी तोप तैयार की जो एक मिनट मे छह राउंड छोड़ती थी टेलीफोन की सहायता से विशाल सेनाओं के करतों मे ताल - मेल बिठाना सम्भव हो गया।

7) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों मे परिवर्तन →

कि औद्योगिक क्रांति ने अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। जर्मनी फ्रांस आदि देशों मे लिए रेलवे लाइन बिछ जाने से, उनका आपसी सम्पर्क बढ़ा। हवाई जहाजों एवं समुद्री जहाजों ने समुद्र पार के देशों की यात्रा करना सम्भव बना दिया यहि ये एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता भी अनुभव होने लगी।

क्रांति के प्रभाव

(1) रोमानोव शासन का अंत —

1917 ई० की रूस की क्रांति का पहला महत्वपूर्ण परिणाम यह निकला कि रूस मे निरंकुश राजवंश का अंत हो गया। रूस के लोग ज़ार निकोलस दूसरे के शासन से बहुत तंग आए हुए थे। उन्होंने 15 मार्च 1917 को उसे राजगद्दी छोड़ने पर विवश किया बाद मे जुलाई 1918 ई० को ज़ार और उसकी पत्नी की हत्या कर दी गई।

2) रूस का युद्ध से अलग होना —

रूस की 1917 ई० की क्रांति निस्संदेह प्रथम महायुद्ध मे रूस की पराजय का ही परिणाम थी। इस युद्ध मे रूस के कोई 20 लाख सैनिकों की मृत्यु हुई और लगभग 30 लाख सैनिक घायल हुए देशवासी भी युद्ध के अंत के लिए उत्सुक हो गए।

3) औद्योगिक विकास और आर्थिक उन्नति —

ई० की क्रांति से पूर्व रूस औद्योगिक दृष्टि से बहुत 1917 पिछड़ा हुआ था यद्यपि औद्योगिक दृष्टि से रूस यूरोपीय देशों से बहुत पीछे था। कारखानों का प्रबंध श्रमिकों के हाथों मे आ जाने से मजदूर - वर्ग मे एक नया उत्साह उत्पन्न हुआ परिणामस्वरूप उत्पादन के क्षेत्र मे उन्नति होने लगी।

4) समानता की स्थापना —

1917 ई० की क्रांति के फलस्वरूप रूस में पूंजीपतियों, कुलीन और भूमिपतियों का अंत हुआ और किसानों एवं श्रमिकों का समाज में प्रभुत्व स्थापित हो गया। सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार और समानता की सुविधाएं प्राप्त हुई।

5) रूस का विश्व का एक शक्तिशाली देश बनना —

19वीं शताब्दी तक रूस की गणना यूरोप के शक्तिशाली देशों में नहीं होती थी 1904-05 ई० में जापान जैसे छोटा-से देश ने रूस को पराजित करके समस्त संसार को हैरानी में डाल दिया था 1917 ई० के पश्चात रूस में शक्तिशाली सरकार का निर्माण हुआ विश्व का एक अति शक्तिशाली देश बन गया।

6) साम्यवादी सिद्धांतों का अन्य देशों में प्रसार —

रूसी क्रांति के पश्चात धीरे-धीरे यूरोप और विश्व के अन्य देशों में साम्यवादी सिद्धांतों का प्रसार होने लगा इस क्रांति से प्रोत्साहन प्राप्त करते हुए पोलैण्ड, पूर्वी जर्मनी आदि यूरोपीय देशों ने साम्यवादी शासन-प्रणाली को अपना लिया। एशिया के प्रमुख देश चीन में भी साम्यवाद की स्थापना हो गई

प्र07. जर्मनी का एकीकरण के विभिन्न चरण और उसमें बिस्मार्क का योगदान है।

उ07> भूमिका —

फ्रांस की राज्य-क्रांति से पूर्व जर्मनी 360 राज्यों का समूह था। ये राज्य पवित्र रोमन साम्राज्य का अंग थे जिसका मुखिया आस्ट्रेलिया का राजा था। जर्मन शासक व्यवहारिक रूप में पूर्णतः स्वतंत्र तथा सत्ताधारी थे। इन राज्यों की आपस में ईर्ष्या तथा द्वेष था। जब 1789 ई० में फ्रांस में क्रांति फूटी तो इंग्लैण्ड के बुद्धिजीवियों की भांति जर्मनी के कवियों तथा लेखकों ने भी क्रांति का स्वागत किया जर्मनी के पूर्व में स्थित राईनलैंड के मध्य वर्ग में तो जोश फैल गया उसने जर्मन राज्यों की संख्या कम करके जुलाई 1806 ई० में केवल 16 राज्यों पर आधारित एक राईन संघ स्थापित किया। लेकिन जर्मनी के राष्ट्रवादी इस नई व्यवस्था से अप्रसन्न थे 39 राज्यों के एक ढीले से संघ से एकीकृत जर्मनी के निर्माण का वर्णन निम्नलिखित किया गया है —

एकीकरण के आरम्भिक प्रयास

(i) बाधाएं — जर्मनी के एकीकरण के मार्ग में विभिन्न बाधाएं थी। सर्वप्रथम, 1789 ई० में फ्रांस की क्रांति के समय जर्मनी 360 राज्यों में विभाजित था। इन राज्यों में एकता की बहुत कमी थी चौथा जर्मनी के उत्तरी भाग

में स्थित राज्यों के लोग प्रोटेस्टेंट धर्म के थे। वे रूढ़िवादी होने के अतिरिक्त निरंकुश शासक के समर्थक थे। इसके विपरीत दक्षिण के राज्यों में रोमन कैथोलिक धर्म का प्रचार था और उनकी प्रजा अपने विचारों में उदार थी। जर्मनी के एकीकरण सम्बंधी प्रत्येक यत्न को असफल बनाने पर दृढ़ संकल्प था।

2) आंदोलन का आरम्भ —

निराशा तथा क्षोभ के वातावरण में जर्मनी के विद्यार्थी तथा बुद्धिजीवी अधीर हो उठे। विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों ने ब्रशेन शॉफ्ट नाम की एक गुप्त संस्था स्थापित की जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय एकता व स्वतंत्रता के हित में प्रचार करना था इसकी अनेक शाखाएं खोली गई। मैटरनिख इस संस्था को सबसे अधिक क्रांतिकारी एवं खतरनाक मानता था 1819 ई० में कारजेबू नामक एक रूसी साहित्यकार एवं नाटककार का कार्ल सैंड नामक एक युवक ने कत्ल कर दिया क्योंकि यह किया क्योंकि वह अपने लेखों में उदारवाद की आलोचना करता था।

3) मैटरनिख का दमन —

इन क्रांतिकारी तत्वों का दमन करने के लिए मैटरनिख जर्मनी की संसद द्वारा 1819 ई० में कुछ कानून पास करवाए। इन्हें

कार्ल्सबाद आदेश इनके अनुसार (i) विद्यार्थी संघों को भंग कर दिया गया। उन्हें गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया (ii) समाचार पत्रों में छपने वाली सामग्री को दबावीन करने का नियम बनाया गया। इस दमन नीति के कारण आगामी दस वर्षों तक जर्मनी में शांति का वातावरण बना रहा।

4) 1830 ई० की क्रांति का प्रभाव —

1830 ई० में जब फ्रांस में क्रांति हुई तो जर्मनी के कुछ राज्यों में भी विद्रोह की आग भड़की। परिणामस्वरूप सैक्सनी, हेस्से-कैसल के शासकों ने भयभीत हो कर प्रजा को संविधान प्रदान किया यह संविधान अस्थायी सिद्ध हुए। मुख्य कारण था कि मैटरनिख ने इन आंदोलनों को निर्ममता से कुचल दिया। इसके बावजूद यहां के लोगों में स्वतंत्रता की आग अंदर ही अंदर सुलगती रही।

5) जॉल्वेरिन की स्थापना —

में जॉल्वेरिन अथवा जर्मनी चुंगी संघ। जनवरी, 1834 ई० की स्थापना हुई इसमें 18 जर्मन राज्य सम्मिलित हुए। इन राज्य के व्यापारियों ने व्यापार को प्रोत्साहित देने के उद्देश्य से बिना किसी चुंगी कर के एक दूसरे से व्यापार करना स्वीकार कर लिया निस्संदेह यह कदम जर्मनी के एकीकरण के मार्ग में एक मील पत्थर प्रमाणित हुआ। इस प्रकार मैटरनिख की दमन नीति के बावजूद इसको बढ़ावा मिला।

जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क की भूमिका

(1) डेनमार्क से युद्ध —

डेनमार्क से युद्ध होने के कारण श्लेसविग और होलस्टीन नामक दो डचियों की समस्या थी। श्लेसविग तथा होलस्टीन नामक डचियां डेनमार्क और जर्मनी के बीच स्थित थीं। होलस्टीन में प्रायः सभी जर्मन जाति के लोग निवास करते थे जबकि श्लेसविग में जर्मन और डेन आधे-आधे थे कई शताब्दियों पहले डेनमार्क का राजा इन डचियों का ड्यूक बन गया था अतः ये डचियां डेनमार्क से सम्बंधित थीं। 1848 ई० में डेनमार्क के राजा ने इन डचियों को अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार रखता था लंदन की संधि से लगभग 10 वर्ष तक शांति स्थापित रही 1863 ई० में जब क्रिश्चियन नवम डेनमार्क की पार्लियामेंट ने उससे एक नया संविधान पास करवाया जिससे पूरे जर्मनी जाति के लोगों में रोष की लहर दौड़ पड़ी कि इस संयुक्त कार्यवाही के कारण अंत में ऑस्ट्रिया से मतभेद पैदा होंगे और लड़ाई लड़ने का अवसर प्रदान होगा प्रशिया और ऑस्ट्रिया ने संयुक्त रूप से डेनमार्क से मांग की कि वह 48 घंटे के अंदर-अंदर अपने नए संविधान को रद्द कर दिया डेनमार्क ने उसकी मांग को अस्वीकार कर दिया।

परिणामस्वरूप 1 फरवरी 1864 ई० के दिन प्रशिया और ऑस्ट्रिया की संयुक्त सेना ने डेनमार्क पर आक्रमण कर दिया युद्ध में डेनमार्क पराजित हुआ और उसे विवश होकर प्रशिया और आस्ट्रिया के साथ 'वियाना' की संधि करनी पड़ी। जबकि ऑस्ट्रिया इन्हें अगस्टनबर्ग के ड्यूक को सौंपना चाहता था। इसलिए उसने ऑस्ट्रिया से एक अस्थायी शांति समझौता कर लिया। 14 अगस्त 1865 ई० के समझौते को 'गेस्टीन की संधि' के नाम से पुकारा जाता है।

(2) ऑस्ट्रिया - प्रशिया युद्ध —

प्रशिया समझौते के अनुसार होलस्टीन का शासन ऑस्ट्रिया को और श्लेसविग का शासन प्रशिया को सम्भालना था। यह भी तय हुआ कि डचियों का विषय जर्मन डाईट में नहीं उठाया जाएगा वास्तव में गेस्टीन की यह संधि बिस्मार्क की कूटनीति का कमाल थी। इसके द्वारा उसने ऑस्ट्रिया के सहयोगी अगस्टबर्ग के ड्यूक को मार्ग से हटा दिया। यह उसे चारों ओर से प्रशिया द्वारा घिरी हुई थी। उसने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए अग्रलिखित पग उठाए। —

(i) बिस्मार्क ने फ्रांस के सम्राट नेपोलियन तृतीय से अक्टूबर 1865 ई० में बियारिज में भेंट की कि प्रशिया और ऑस्ट्रिया में युद्ध छिड़ने पर फ्रांस तटस्थ रहेगा इसके लिए फ्रांस को बेल्जियम नदी के कुछ प्रदेश देने का वायदा किया।

(ii) 8 अप्रैल 1866 ई० को दिन बिस्मार्क ने इटली की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाए। यदि ऑस्ट्रिया पराजित हुआ तो वेनेशिया का राज्य मिल जाएगा।

(iii) 1863 ई० के पोलैण्ड के विद्रोह को दबाने में रूस के जार की सहायता करके प्रशिया ने रूस की सहानुभूति पहले ही प्राप्त कर ली थी। रूस ने युद्ध के समय तटस्थ रहने का वचन दिया इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने जर्मन संघ सुधार की योजना तैयार की उसके अनुसार वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनी गई पार्लियामेंट की व्यवस्था रखी गई। जनता को अपनी योजना पसंद आई और वह उसकी समर्थक बन गई इसस इटली ने प्रशिया का साथ दिया लगभग 7 सप्ताह तक लड़ाई हुई इसलिए इसे 'सात सप्ताह का युद्ध' भी कहा जाता है। प्रशिया और ऑस्ट्रिया के बीच 16 जून 1866 ई० के दिन युद्ध आरम्भ हुआ। दोनों देशों के मध्य 23 अगस्त 1866 ई० को प्राग की संधि हुई। इस संधि की प्रमुख शर्तें निम्नलिखित थीं। —

(i) ऑस्ट्रिया ने प्रशिया के नेतृत्व मे उत्तरी जर्मन रियासतों के संघ के निर्माण को स्वीकार कर लिया

(ii) ऑस्ट्रिया के नेतृत्व मे पुराने जर्मन संघ भंग कर दिया गया।

(iii) ऑस्ट्रिया ने इटली को वेनेशिया का प्रदेश दिया।

5) फ्रांस - प्रशिया युद्ध — बिस्मार्क एकीकरण का काफी काम पूर्ण काम पूर्ण कर चुका था। अब वह दक्षिण के राज्यों बवेरिया, बेडन हेस्से - डार्मस्टेट एवं वुर्टम्बर्ग को मिलकर एकीकरण के काम पूरा करना चाहता था। बिस्मार्क फ्रांस उसके मार्ग की बहुत बड़ी बाधा था कि फ्रांस से जर्मनी को एक करना चाहता था कि फ्रांस से युद्ध छेड़कर वह एक ऐसा शत्रु पैदा कर सकता है जिसे सभी जर्मन राज्यों अपना साझा शत्रु समझेंगे और उससे निपटने के लिए एक हो जाएंगे। इसने 1866 ई० मे ऑस्ट्रिया के साथ उदार व्यवहार करके उसे पहले ही जीत लिया था। कि वह पोप के राज्य को इटली मे मिलाए। बिस्मार्क ने इटली को यह विश्वास दिलाया कि प्रशिया - फ्रांस युद्ध के समय जब फ्रांसीसी सेना रोम मे बुला ली जाए तो वह पोप के राज्य पर अधिकार कर सकता था स्पेन की जनता ने अपनी निरंकुश रानी आइजाबेला से तंग आकर उसे देश से निकाल दिया अब होहेनजोलर्न वंश के राजकुमार लियोपोल्ड से प्रार्थना की गई कि वह स्पेन मे प्रभाव स्थापित हो जाएगा फ्रांस ने लियोपोल्ड के राजा बनाए जाने का विरोध किया फ्रांसीसी राजदूत बेनेडेटी की प्रशिया के राजा विलियम प्रथम के साथ एम्स मे भेंट हुई। इसमें विलियम प्रथम ने नेपोलियन तृतीय की मांग को अस्वीकार कर दिया प्रधानमंत्री बिस्मार्क के पास 13 जुलाई, 1870 ई० को भेज दिया। यह तार 'एम्स का तार' के

नाम से प्रसिद्ध है इस घटना से फ्रांसीसी जनता भड़क उठी और नेपोलियन तृतीय और उसके 81 हजार सैनिकों को बंदी बना लिया गया प्रशिया को दक्षिणी जर्मनी के साथ राज्यों से सैनिक सहायता मिल गई। यह संधि फ्रांस और प्रशिया के बीच 10 मई 1871 ई० के दिन हुई इसके अनुसार —

(i) फ्रांस ने प्रशिया को अल्सास तथा लोरेन के प्रदेश तथा 20 करोड़ पौंड हर्जाने के रूप में देने स्वीकार किए।

(ii) हर्जाने की राशि तीन वर्षों में चुकाई जानी थी। यह भी निश्चित हुआ कि जब तक फ्रांस पूरी राशि नहीं चुका देगा

फ्रांस - प्रशिया युद्ध अभी तक चल ही रहा था कि दक्षिणी जर्मनी के चार राज्य में जो जर्मन संघ से अलग थे, नवीन जर्मन संघ में मिल गए। इन राज्यों ने युद्ध में प्रशिया का पूर्ण साथ दिया था। प्रशिया का राजा अब जर्मनी का सम्राट बन गया। तदुपरांत सम्पूर्ण देश में एक ही संविधान लागू किया गया।

प्र08. 1917 ई० की रूसी क्रांति के कारण, घटनाओं तथा प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उ07 भूमिका — 1917 ई० की रूसी क्रांति को विश्व की अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक माना जाता है। इस क्रांति के विस्फोट से न केवल रूस अपितु विश्व में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। 1917 ई० की इस क्रांति को 'बोल्शेविक क्रांति' के नाम से भी जाना जाता है। इस क्रांति के कारण, घटनाओं तथा प्रभावों का वर्णन निम्नलिखित किया गया है कि —

कारण

(i) जारों का निरंकुश शासन → रूस की क्रांति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण रूस के जारों द्वारा निरंकुश शासन की स्थापना था। एलेग्जेंडर द्वितीय, एलेग्जेंडर तृतीय तथा निकोलस द्वितीय नाम के जार राजा के दैवी अधिकारों के सिद्धांत में विश्वास रखते थे। वे असीम शक्तियों के मालिक थे। उन सब उदारवादी एवं प्रगतिशील तत्वों का सख्ती से दमन किया जो किसी भी प्रकार उनके निरंकुश शासन को चुनौती दे सकते थे। उन्होंने सर्वप्रथम समाचार पत्रों को, जो उनकी दृष्टि से पश्चिमी विचारों के प्रसार का मुख्य साधन थे व उस आत्याचारी शासन का अंत करने के बारे में सोचने लगे।

2) आयोग्य शासन —

रूसी जारों द्वारा स्थापित शासन प्रबंध भी पूरी तरह आयोग्य एवं भ्रष्ट था। अधिकतर कर्मचारी रिश्वतखोर थे शासन प्रबंध के महत्वपूर्ण पदों पर केवल उच्च वर्ग के लोगों को ही नियुक्त किया जाता था। ऐसी नियुक्तियां करते समय उसकी योग्यता की अपेक्षा उसके वर्ग को ध्यान में रखा जाता था।

3) जारीना तथा रस्पुटिन का कुप्रभाव —

जार निकोलस द्वितीय की रानी जारीना जर्मनी की रहने वाली थी। उसे रूसी जनता से कोई वास्तविक प्यार न था। वह कट्टर प्रतिक्रियावादी विचारों वाली महिला थी। उसने सदैव अपने पति को तानाशाही ढंग से शासन करने की प्रेरणा दी रस्पुटिन बड़ा स्वार्थी, दुराचारी एवं पाखण्डी साधु था।

4) कृषकों की दयनीय स्थिति —

रूस की जनसंख्या का अधिकतर भाग किसान वर्ग से सम्बंधित था। वे ज़ार शासकों की आज्ञा का पालन करना अपना धार्मिक कर्तव्य समझते थे। लेकिन वे कृषकों में खुशहाली एवं जागृति आने से उनकी सत्ता खतरे में पड़ जाती उनमें व्याप्त बेचैनी 1917 ई० की क्रांति का एक मुख्य कारण बनी।

5) मजदूरों में असंतोष —

रूस में कारखानों एवं खानों में काम करने वाले मजदूरों की दशा भी बड़ी दयनीय थी। उन्हें दिन में 15 से 20 घंटे तक काम करना पड़ता था। लेकिन इस पर भी उनका जीवन निर्वाह नहीं होता था और उन्हें बहुत कम वेतन मिलता था परिणामस्वरूप मजदूर वर्ग में भी रोष की भावना व्याप्त थी और वे ऐसे समाज को बदलना चाहते थे

6) समाजवाद का प्रसार —

19 वीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों में रूस में समाजवाद विचारों का प्रसार बड़ी तीव्रता से हो रहा था जो लोग अल्पमत में थे उन्हें मैनशेविक कहा जाता था बोल्शेविकों ने अपना अंतिम लक्ष्य समाजवादी व्यवस्था कायम करना तय किया इन समाजवादी विचारों के प्रसार के कारण रूस में क्रांति का वातावरण तैयार हो गया।

7) पश्चिमी विचारों का प्रभाव —

रूस के ज़ार निकोलस द्वितीय ने अपने देश को पश्चिमी विचारों के प्रभाव से मुक्त रखने का हर सम्भव प्रयास किया। उसने प्रेस पर सेंसर लगा दिया था। विदेशों से आने वाले साहित्य पर भी

सरकार कड़ी नजर रखती थी। सरकार की आज्ञा का पालन नहीं करने वाले को कड़ी यातनाएं दी जाती थी

8) रूस - जापान युद्ध —

1904 - 05 ई० मे रूस तथा जापान के मध्य युद्ध हुआ। रूस का ख्याल था कि वह जापान के साथ एक छोटा - मोटा युद्ध करके इसमें विजय प्राप्त कर लेगा कि इस युद्ध मे रूस की पराजय हो गई अतः उन्होंने ऐसी अयोग्य सरकार को बदलने का निर्णय लिया

9) 1905 ई० मे रूसी क्रांति —

रूस मे मजदूरों में असंतोष बड़ी तीव्रता से बढ़ता जा रहा था। उन्होंने 22 जनवरी, 1905 ई० को रविवार के दिन अपनी 11 मांगो का चार्टर जार को प्रस्तुत करने का निर्णय लिया उनकी मुख्य मांगे थीं — इस भयंकर रक्तपात के कारण इस रविवार को 'खूनी रविवार' कहा जाता है जैसे ही इस नरसंहार का समाचार फैला वैसा ही सारे रूस मे हलचल मच गई इस प्रकार 1905 ई० की क्रांति चाहे सफल न हुई फिर भी इसके परिणाम दूरगामी सिद्ध हुई

10) प्रथम विश्व युद्ध मे रूस की पराजय —

प्रथम विश्व युद्ध में रूस की पराजय 1917 ई० रूसी क्रांति का तात्कालिक कारण बना। इस युद्ध में लड़ने की रूस के पास क्षमता नहीं था इसके इस कारण रूस को भारी विनाश तथा निराशा का मुंह देखना पड़ा 1915 ई० तक उसके लाखों सैनिक मारे गये दूसरी ओर किसानों तथा मजदूरों की कमी हो जाने के कारण उत्पादन में बहुत गिरावट आ गई।

घटनाएं

7 मार्च, 1917 ई० को रूस में क्रांति का प्रथम विस्फोट हुआ। उस दिन गरीब किसान मजदूरों ने पेत्रोग्राद की सड़को पर जुलूस निकाला सरकार ने आदेश दिया कि भीड़ पर गोली चलाकर सभी लोगों को तितर - बितर कर दिया किंतु सिपाहियों की सहानुभूति मजदूरों के साथ थी। उन्होंने गोली चलाने से इंकार कर दिया परंतु इसुमा ने भंग होने से इंकार कर दिया 12 मार्च को पच्चीस हजार सैनिक हड़तालियों के पक्ष में मिल गए। जार के पतन की इस घटना को 'फरवरी की क्रांति' कहा जाता है क्योंकि पुराने रूसी कैलेंडर के अनुसार यह 27 फरवरी 1917 को घटित हुई थी। जार का पतन क्रांति का आरम्भ मात्र ही थी। 15 मार्च 1917ई०

की प्रिंस ल्वाव के नेतृत्व में अस्थायी सरकार का गठन किया गया। अप्रैल 1917 ई० मे लेनिन जो स्विट्जरलैंड मे निर्वासन का जीवन व्यतीत कर रहे थे। रूस वापस लौटे। 7 नवम्बर, 1917 ई० को पेट्रोग्राद मे एक विद्रोह हुआ इस विद्रोह का नेतृत्व लेनिन कर रहा था यह क्रांति पुराने रूसी कैलेंडर के अनुसार 25 अक्टूबर को घटी थी इसलिए उसे 'अक्टूबर क्रांति' भी कहा जाता है 8 नवम्बर को नई बोल्शेविक सरकार का पहला मंत्रिमण्डल बना। लेनिन को प्रधानमंत्री तथा ट्राटस्की को विदेश मंत्री का पद प्राप्त हुआ उसने मार्च 1918 ई० को जर्मनी के साथ ब्रेस्ट लिटोव्स्क की संधि की जिसके अनुसार रूस को जर्मनी को कुछ प्रदेश देने पड़े।

नई सरकार शीघ्र ही गृह युद्ध में फंस गई। यह गृह युद्ध 1918 ई० से 1920 ई० तक चलता रहा नीतियों के कारण देश के पूंजीपति, कुलीन, उद्योगपति और पादरी इसके कट्टर विरोधी बन गए थे उसके संसाधनों का लड़ाई में उपयोग करने के लिए एवं प्रति क्रांतिकारियों को सहयोग देने के लिए वहां पर सैनिक हस्तक्षेप किया सरकार के विरोधियों का दमन करने के लिए 'चेका' नामक एक क्रांतिकारी न्यायालय की स्थापना की। लेनिन की सरकार ने सफलता प्राप्त की।

नहीं किया तथापि उसमे इंग्लैंड की शासन प्रणाली की प्रशंसा एवं स्वेच्छाचारी शासन की घोर निंदा की। उसने व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बल दिया भले ही वह किसी भी सम्प्रदाय या वर्ग का क्यों न हो धार्मिक स्वतंत्रता व नागरिक अधिकार मिलने चाहिए वाल्तेयर ने पादरी वर्ग के विलासपूर्ण जीवन की कड़ी आलोचना की। इनमे से 1733 ई० मे प्रकाशित लैटर्स ऑन दि इंग्लिश बहुत लोकप्रिय हुई।

अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव

1776 ई० मे अमेरिका की बस्तियों ने इंग्लैंड के अन्यायपूर्ण शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। धीरे-2 इस विद्रोह ने स्वतंत्रता संग्राम का रूप धारण कर लिया सप्त वर्षीय युद्ध मे हुई पराजय का बदला लेने के लिए फ्रांस ने इंग्लैंड के विरुद्ध अमेरिका की जन व धन से सहायता की। अमेरिका से लौटने वाले फ्रांसीसी सैनिकों ने फ्रांस मे जनसाधारण को यह तर्क देना शुरु कर दिया कि यदि अमेरिका के लोग इंग्लैंड को हराकर स्वतंत्र हो सकते है तो फ्रांस के लोग अत्याचारी निरंकुश शासन से छुटकारा क्यों नहीं पा सकते ? ऐसी विचारधारा ने फ्रांस के वातावरण को क्रांतिकारी बना दिया। इसके अतिरिक्त इस युद्ध मे भाग लेने से फ्रांस का आर्थिक संकट अत्यंत गम्भीर हो गया।

तात्कालिक कारण

1783 ई० में जब अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम समाप्त हुआ उस समय क्रांति फ्रांस की आर्थिक स्थिति काफी दुर्बल हो चुकी थी जनता को न केवल अन्न की कमी व मूल्यों में वृद्धि के कारण ही कष्ट सहने पड़े अपितु बड़े-2 नगरों के कारखानों बंद होने से भी अर्द्ध बेकारी का सामना करना पड़ा। इस संकट के दौरान कृषकों तथा मजदूरों व्यापारियों व उद्योगपतियों तथा व्यापारियों व देहातियों को एक समान विपत्तियां झेलनी पड़ी ऐसी परिस्थितियों में देश के अधिकतर लोगों में यह विश्वास दृढ़ हो गया कि उनकी इन विपत्तियों का मूल कारण देश की राजनीतिक प्रणाली ही है 1787 ई० में राजा ने इस समस्या पर विचार करने के लिए देश के प्रमुख व्यक्तियों की एक सभा बुलाई। उसने नेकर को पुनः वित्त मंत्री नियुक्त किया और स्टेट्स जनरल बुलाने की घोषणा की। उस का यह निर्णय ही फ्रांस की राज्यक्रांति का प्रथम सिद्धा हुआ

प्र०10 1911 की चीनी क्रांति के कारण, घटनाएं व परिणाम बताएँ।

उ०→ भूमिका —

प्राचीन राजनीतिक विचारधारा के अनुसार चीन में सम्पूर्ण राष्ट्र को एक राष्ट्रीय परिवार माना जाता था तथा सम्राट उस राष्ट्रीय परिवार का मुखिया माना जाता था। उस समय चीन के लोगों में यह धारणा प्रचलित थी कि जब तक सम्राट जन-हित कार्य करता रहता था और प्रजा उसका सम्मान करती थी और तब तक अपने पद पर रहता था उसका प्रदर्शन समय-2 पर क्रांति एवं विद्रोह के रूप में होता रहा। 1911 ई० की क्रांति भी इसी का परिणाम था जिसने मांचू शासन को उखाड़ फैंका और चीन में गणतंत्र की स्थापना हुई।

1911 ई० की चीनी क्रांति के कारण

(i) विशाल जनसंख्या तथा प्राकृतिक विपदा —

चीन एक विशाल जनसंख्या वाला देश था उसकी जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही थी इस वृद्धि के कारण चीन में आर्थिक कठिनाइयां पैदा हो गई थीं। 1885 ई० में चीन की कुल आबादी 37 करोड़ थी जो कि 1911 ई० के बढ़कर 43 करोड़ हो गई केवल कृषि उत्पादन घटा बल्कि भारी मात्रा में जनक्षति भी हुई।

2) विशाल चीनियों का योगदान — चीन में फैली भुखमरी तथा अव्यवस्था से परेशान होकर चीन वासियों ने विदेशों में जाना आरम्भ कर दिया था प्रारम्भ में वे अमेरिका में गए क्योंकि अमेरिका को श्रमिकों की आवश्यकता थी। परंतु कुछ समय के पश्चात परिस्थितियां बदली और अमेरिका ने नियम बनाकर चीनियों के आने पर प्रतिबंध लगा दिया उसमें जिस कारण उनमें क्रांति की भावना का विकास हुआ।

3) प्रेस का योगदान — सर्वप्रथम चीन में ही छापेखाने का अविष्कार हुआ था यहां प्रमुखतः प्राचीन पुस्तकें ही छापी जाती थीं। समाचार-पत्रों का प्रकाशन 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आरम्भ किया गया। जिस कारण लोगों में जागरूकता आई और वे क्रांति के बारे सोचने लगा।

4) चीनी सरकार की दुर्बलता — चीनी सरकार की दुर्बलता भी 1911 ई० की क्रांति का एक कारण सिद्ध हुई। चीनी सरकार की स्वयं की दुर्बलता के कारण बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में उसे कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। इसी दुर्बलता के कारण केन्द्रीय शासन जीर्ण-शीर्ण था 1911 ई० की क्रांति को समय रहते टाला जा सकता था।

5) डॉ० सन-यात-सेन का योगदान — चीन में क्रांतिकारी भावनाओं को विकसित करने तथा क्रांतिकारियों को संगठित करने में डॉ० सन-यात-सेन ने उल्लेखनीय योगदान दिया। उसे चीन की क्रांति का पितामह माना जाता है। डॉ० सन-यात-सेन का जन्म 1866 ई० में कुआंगतुंग में एक निर्धन किसान के यहां हुआ उसने अपनी आरम्भिक शिक्षा अमेरिका में प्राप्त की तथा हांगकांग से डॉक्टरी पास की।

6) थुंग-मेंग हुई का गठन — चीनी छात्र डॉ० सन-यात-सेन के विचारों से बहुत प्रभावित थे उन्होंने डॉ० सन-यात-सेन के संरक्षण में जापान के नगर टोकियो में एक संगठन बनाया जिसका उद्देश्य प्रांतीय पदाधिकारियों को केन्द्रीय शासन से अलग होने के लिए प्रेरित करना था इस दल के 100 सदस्यों ने मिलकर कैंटन के गर्वनर के दफ्तर पर आक्रमण कर दिया था

7) तात्कालिक कारण — 1909 ई० तक चीनी में लोगों की असंतुष्टता इतनी बढ़ गई थी कि क्रांति के लिये पृष्ठभूमि लगभग तैयार हो गई थी। इस वातावरण में रेल के राष्ट्रीयकरण का मामला तात्कालिक कारण सिद्ध हुई। 1909 ई० में चीन की सरकार ने रेल मार्गों के निर्माण के लिए एक योजना बनाई।

1911 ई० की चीनी क्रांति की घटनाएं

1.) हैंकों की घटना —

10 अक्टूबर, 1911 ई० में हैंको में एक ऐसी घटना घटी जिसने उपद्रव की तीव्र गति प्रदान कर दी। उस दिन हैंको में एक रूसी परिवार के घर एक बम-विस्फोट हुआ जिन सैनिकों का नेतृत्व कर्नल ली युवान हुंग कर रहा था। शीघ्र ही बहुत से ग्रामीण विद्रोही भी आगे आ मिले नानकिंग को अपनी राजधानी घोषित किया वह 25 दिसम्बर 1910 ई० में शंघाई पहुंचा और सभी क्रांतिकारियों ने उसे अपना नेता मान लिया।

2) युआन शी काई की प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्ति —

अक्टूबर 1912 ई० को राष्ट्रीय असेम्बली का एक अधिवेशन पीकिंग में बुलाया गया (i) एक उत्तरदायी मंत्रिमण्डल की स्थापना की जाए जिसका नेता योग्य तथा सदाचारी हो (ii) सभी राजनीतिक अपराधियों को आम माफी दे दी जाए मांचू शासन को संवैधानिक सम्राट बना दिया गया राजकुमार चुन क्रांतिकारियों का दमन करना चाहता था

3) शांति समझौता तथा मांचू शासन का अंत —

अब तो व्यक्तियों पर निर्भर करना था। चीन का भविष्य चीन के दक्षिण में नानकिंग में डॉ० सन-यात-सेन ने

अपनी स्थिति काफी सुदृढ़ कर ली थी। उधर उत्तर में प्रधानमंत्री युआन-शी-काई काफी शक्तिशाली हो गया। उसका केन्द्र पीकिंग था। काफी समय तक मांचू समर्थकों तथा क्रांतिकारियों में वार्तालाप होता रहा। डॉ० सन-यात-सेन ने सुझाव दिया कि मांचू वंश का अन्त कर गणतंत्र की स्थापना की जाए। परिणामस्वरूप 12 फरवरी, 1912 को एक शाही घोषणा की गई जिसके अनुसार सारी राजनीतिक शक्ति युआन को सौंप दी गई।

1911 ई० की चीनी क्रांति के परिणाम तथा महत्त्व

1911 ई० की क्रांति चीन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसे वास्तविक क्रांति का नाम दिया जा सकता है। इस क्रांति से चीन में तानाशाही का अन्त हुआ और गणतंत्र की स्थापना हुई।

① मांचू वंश का अन्त :—

1911 ई० की क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह निकला कि लगभग 300 वर्षों से स्थापित मांचू शासन का अन्त हो गया। मांचू शासक अयोग्य, भ्रष्ट, विलासी थे। न तो वे कुशल शासक हो सके और न ही विदेशी शक्तियों का सामना कर सके। वे अत्यंत रूढ़िवादी थे। चीन के लोग ऐसे शासन से छुटकारा पाना चाहते थे।

② राजतन्त्र का अन्त :—

1911 ई० की क्रांति ने चीन में राजतंत्र का अन्त कर दिया था। मांचू शासन के अंत के पश्चात युआन चीन का प्रथम राष्ट्रपति बना था। वह गणतंत्र में विश्वास नहीं रखता था। वह राजतंत्र के पक्ष में था। 1905 ई० में वह चीन में अस्थायी तौर पर राजतंत्र स्थापित करने में सफल हो गया था। परंतु लोगों ने उसे

कोई समर्थन न दिया गया था। इससे वह निराश हो गया था। 1916 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। इसके साथ ही चीन में क्रांतीय विचारधारा का भी अंत हो गया।

③ नए विचार :-

1911 ई० में क्रांति की कारण चीन के शिक्षित नवयुवकों में नवीन विचारों का संचार हुआ। जो युवक पश्चिमी देशों से शिक्षा प्राप्त कर आए वे नवीन विचारों से ओत-प्रोत थे तथा उन्होंने आते ही अपने देश में रूढ़िवादी सामाजिक ढांचे को बदलने के प्रयास आरंभ कर दिए। पश्चिमी विचारकों से प्रेरित होकर चीनी लोगों का दृष्टिकोण बदल दिया।

④ माओ-त्से-तुंग का उत्थान :-

1911 ई० की क्रांति के पश्चात् युआन की गणतंत्रीय तथा चियांग की राष्ट्रीय सरकारें बनी। परंतु ये सरकारें भी देश को कठिनाई के भंवरें से बाहर न निकल सकी। तब साम्यवादी दल की स्थापना हुई। साम्यवादियों ने चीन के उत्तर-पश्चिम में एक लंबे मार्च के बाद आयोजन किया। इस मार्च में लगभग 30 हजार लोगों ने भाग लिया। इसी मार्च के दौरान प्रसिद्ध नेता माओ-त्से-तुंग का उत्थान हुआ।

⑤ चीन का आधुनिकीकरण :-

राष्ट्रीय सरकार स्थापित करने के पश्चात् चीन धीरे-2 आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर हुआ था। स्वास्थ्य, उद्योग, सिंचाई, संचार आदि से संबंधित कई सुधार किए गए। इससे सभी समस्याओं का हल न हो सका, परंतु फिर भी काफी सीमा तक लोगों में राष्ट्रीय भावना जाग्रत करने में सफल रही। यह क्रांति चीन के इतिहास में एक नया मोड़ आ गया।

Q. द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों एवं परिणामों का वर्णन कीजिए

Ans: - द्वितीय विश्व युद्ध के कारण :-

1. वर्साय की संधि :-
2. राष्ट्र संघ की असफलता :-
3. निःशस्त्रीकरण में असफलता :-
4. तानाशाही सरकारों का गठन :-
5. तुष्टीकरण की नीति की असफलता :-
6. उग्र राष्ट्रवाद का विकास :-
7. अल्पसंख्यकों की समस्या :-
8. इग्लैंड तथा फ्रांस में मतभेद :-
9. इटली की असंतुष्टता
10. युरोप का दो गुटों में विभाजित होना :-
11. तात्कालिक कारण ! पोलैण्ड पर आक्रमण ! -

युद्ध की घटनाएं :-

युद्ध के परिणाम :-

1. जन-धन की हानि :-
2. विश्व का दो विचारधाराओं में बटना :-
3. युरोप की सर्वोच्चता का अंत :-
4. राष्ट्रीयता की भावना का अंत :-
5. शीतयुद्ध :-
6. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना :-
7. गुट निरपेक्षता :-
8. सुरक्षा संगठनों की स्थापना :-
9. उपनिवेशवाद की समाप्ति :-
10. नये स्वतंत्र राज्यों का उदय :-

Q. प्रथम विश्व युद्ध के कारण घटनाएं व परिणाम का वर्णन करे।

A. प्रत्येक युद्ध के पीछे अनेक ऐतिहासिक एवं मनोवैज्ञानिक कारण होते है।

युद्ध के कारण :-

1. यूरोपीय देशों में दलबंदी
2. गुप्त कूटनीति की प्रणाली
3. आर्थिक साम्राज्यवाद
4. राष्ट्रवाद की भावना का उत्थान
5. सैनिकवाद का उदय
6. समाचार-पत्रों का योगदान
7. लोकतंत्र बनाम तानाशाही शासन :-
8. अंतर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव
9. मोरक्को संकट
10. बोस्निया का संकट
11. अगादीर का संकट
12. अलसेस और लॉरेन प्रदेश
13. बाल्कन युद्ध
14. परतंत्र इटली
15. विलियम कैसर द्वितीय की महत्वकांक्षाएं
16. आर्क ड्यूक फर्डीनेंड का वध 1914 ई.

युद्ध की घटनाएं :-

युद्ध के परिणाम :-

1. जन-धन की भारी हानि
2. लोकतंत्र का उत्थान
3. रूस में ~~साम्य~~ साम्यवादी क्रांति
4. राजतन्त्रात्मक प्रणालियों को आघात
5. नवीन राज्यों की स्थापना
6. राष्ट्रवाद का प्रसार
7. शक्ति-संतुलन की समाप्ति
8. अमेरिका की आर्थिक सर्वोच्चता
9. राष्ट्रसंघ की स्थापना
10. अल्पसंख्यकों की समस्या
11. किसानों की स्थिति में सुधार
12. मजदूरों की स्थिति में सुधार

Q. जापान का विश्व शक्ति के रूप में उदय के कारण बताइए।

जापान का आधुनिकीकरण :-

1. शाही शपथ 1868 ई० :-
2. सामन्त प्रथा का अंत :-
3. शासन का केन्द्रीयकरण :-
4. सेना का आधुनिकीकरण :-
5. कानूनी समानता की स्थापना :-
6. औद्योगिक विकास :-
7. यातायात व संचार के साधनों का विकास :-
8. बैंकिंग प्रणाली का गठन :-
9. खानों का विकास :-
10. कृषि में सुधार :-
11. शिक्षा के क्षेत्र में सुधार :-
12. नवीन जीवन शैली का विकास :-
13. शिंतो धर्म की पुन: स्थापना :-
14. राजनीतिक चेतना का विकास :-

(1) सम्राट (2) मंत्रिमंडल (3) संसद (4) मौलिक अधिकार, न्यायालय

जापान का विश्वशक्ति के रूप में।

1. जापान की खोई सम्प्रभुता की प्राप्ति :-
2. चीन जापान युद्ध
3. इंग्लैंड के साथ संधि 1902
4. रूस-जापान युद्ध 1905 ई०
5. प्रथम विश्व युद्ध तथा जापान
6. पेरिस शांति सम्मेलन तथा जापान
7. दो विश्व युद्धों के मध्य जापान
1. वाशिंगटन सम्मेलन 2. तानाका स्मरण पत्र 3. मंचूरिया पर आक्रमण 4. चीन पर आक्रमण
8. द्वितीय विश्व युद्ध एवं जापान का पतन